



## आदिवासी महिला खिलाड़ियों का सशक्तिकरण: हॉकी और तीरंदाजी के माध्यम से

अनामिका हेम्ब्रोम

शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, एसकेएमयू, दुमका, झारखंड

डॉ. संजीव कुमार सिन्हा

सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एसकेएमयू, दुमका, झारखंड।

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.23772029>

### ARTICLE DETAILS

#### Research Paper

Received: 27-08-2026

Accepted: 26-09-2026

Published: 20-10-2026

#### Keywords:

आदिवासी महिलाएँ, महिला सशक्तिकरण, खेल, हॉकी, तीरंदाजी, खेलो इंडिया, जनजातीय खेल, महिला खिलाड़ी, सामाजिक सशक्तिकरण, खेल एवं लैंगिक समानता

### ABSTRACT

भारत में आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण सामाजिक समावेशन, लैंगिक समानता और समावेशी विकास का एक महत्वपूर्ण विषय है। आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को समझते समय उनके क्षेत्रीय, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भों को ध्यान में रखना आवश्यक है। शिक्षा, रोजगार, संसाधनों तक पहुँच और संस्थागत अवसरों की असमानता उनके विकास को प्रभावित कर सकती है। ऐसी परिस्थितियों में खेल महिलाओं के लिए केवल शारीरिक स्वास्थ्य और मनोरंजन का माध्यम न होकर आत्मविश्वास, नेतृत्व, सामाजिक पहचान, निर्णय क्षमता और आर्थिक अवसरों के विकास का साधन बन सकता है। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था के अनुसार खेल लड़कियों और महिलाओं में आत्मविश्वास, मानसिक मजबूती, टीम भावना और नेतृत्व जैसी क्षमताओं के विकास में योगदान करता है तथा लैंगिक रुढ़ियों को चुनौती देने का माध्यम बन सकता है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य हॉकी और तीरंदाजी के माध्यम से आदिवासी महिला खिलाड़ियों के सशक्तिकरण का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और नेतृत्व संबंधी विश्लेषण करना है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन है। इसमें सरकारी दस्तावेजों, जनजातीय मामलों से संबंधित आधिकारिक आँकड़ों, खेल संबंधी सरकारी स्रोतों, खेलो इंडिया, प्रेस सूचना ब्यूरो,

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

हॉकी इंडिया, संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था तथा उपलब्ध अकादमिक साहित्य का उपयोग किया गया है। अध्ययन में किसी प्रकार के काल्पनिक सर्वेक्षण, उत्तरदाता या प्राथमिक आँकड़ों का प्रयोग नहीं किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हॉकी और तीरंदाजी आदिवासी महिला खिलाड़ियों के लिए सामाजिक पहचान और व्यक्तिगत क्षमता विकास के महत्वपूर्ण माध्यम बन सकते हैं। हॉकी की टीम आधारित प्रकृति सहयोग, संचार और नेतृत्व को बढ़ावा देती है, जबकि तीरंदाजी एकाग्रता, अनुशासन, आत्म-नियंत्रण और व्यक्तिगत उपलब्धि पर बल देती है। 2026 में आयोजित प्रथम खेलो इंडिया जनजातीय खेलों ने आदिवासी खिलाड़ियों के लिए एक राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराया, जिसमें हॉकी और तीरंदाजी दोनों को पदक खेलों के रूप में शामिल किया गया।

---

### प्रस्तावना

भारत सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता वाला देश है, जिसमें अनुसूचित जनजातियाँ एक महत्वपूर्ण सामाजिक समूह हैं। आदिवासी समुदायों की महिलाओं की स्थिति को किसी एक सामान्य दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता, क्योंकि विभिन्न जनजातीय समुदायों में सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों, शिक्षा और महिलाओं की भूमिका में पर्याप्त विविधता पाई जाती है। इसलिए आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन करते समय सामाजिक एवं क्षेत्रीय विविधता को ध्यान में रखना आवश्यक है।

महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें महिलाओं की संसाधनों तक पहुँच, निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक भागीदारी, आत्मविश्वास और उपलब्धियाँ शामिल होती हैं। काबीर (1999) ने सशक्तिकरण को संसाधन, एजेंसी (निर्णय लेने की क्षमता) और उपलब्धियों के संदर्भ में समझाया है। इस दृष्टिकोण के अनुसार केवल संसाधनों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है; महिलाओं में अपने जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता और उन निर्णयों को परिणामों में बदलने की क्षमता भी आवश्यक है।

खेल इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था के अनुसार खेल महिलाओं और लड़कियों में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, मानसिक मजबूती तथा टीम भावना विकसित करने के साथ-साथ सामाजिक संबंधों को मजबूत कर सकते हैं। खेल महिलाओं को लैंगिक रुढ़ियों और सामाजिक बंधनों को चुनौती देने का अवसर भी प्रदान करते हैं।

भारत में महिला खेलों तथा ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों की खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न सरकारी पहलें संचालित की जा रही हैं। खेलो इंडिया कार्यक्रम के माध्यम से खेल प्रतिभा की पहचान, प्रशिक्षण, महिला खेलों तथा ग्रामीण और आदिवासी खेलों को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाता है। इस संदर्भ में हॉकी और तीरंदाजी विशेष महत्व रखते हैं, क्योंकि झारखंड और आसपास के क्षेत्रों से इन दोनों खेलों में महिला खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

### भारत में आदिवासी महिलाओं की स्थिति

भारत में अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं की स्थिति सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है। जनगणना 2011 के अनुसार अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या लगभग 10.4 करोड़ थी, जिसमें महिलाओं की संख्या लगभग 5.19 करोड़ थी। अनुसूचित जनजातियों की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जिसके कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और अन्य संस्थागत सुविधाओं तक पहुँच कई क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी रहती है। **चूँकि जनगणना 2021 के आँकड़े अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं, इसलिए इस अध्ययन में जनगणना 2011 के आँकड़ों का उपयोग किया गया है।**

शिक्षा आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण आधार है। जनगणना 2011 के आधार पर अनुसूचित जनजातियों की कुल साक्षरता लगभग 59 प्रतिशत थी, जबकि महिला साक्षरता लगभग 49.4 प्रतिशत और पुरुष साक्षरता लगभग 68.5 प्रतिशत थी। इससे स्पष्ट होता है कि आदिवासी महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों का विस्तार सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

आदिवासी महिलाओं की स्थिति को केवल सामाजिक पिछड़ेपन के आधार पर समझना उचित नहीं है। विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है कि आदिवासी महिलाओं की स्थिति समुदाय और क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। शिक्षा, रोजगार, आर्थिक संसाधन और सामाजिक भागीदारी उनके सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। इसलिए आदिवासी महिला सशक्तिकरण के लिए ऐसी नीतियों की आवश्यकता है जो स्थानीय परिस्थितियों और महिलाओं की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप हों। खेल इस संदर्भ में एक वैकल्पिक अवसर प्रदान कर सकते हैं। खेल प्रतिभा के माध्यम से महिलाओं को प्रशिक्षण, छात्रवृत्ति, प्रतियोगितात्मक अवसर, पुरस्कार तथा संभावित रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। इस प्रकार खेल सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता का माध्यम बन सकते हैं।

## महिला सशक्तिकरण : अवधारणा एवं आयाम

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को अपने जीवन, संसाधनों और भविष्य से संबंधित निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना है। यह केवल आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित अवधारणा नहीं है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और व्यक्तिगत आयामों को भी शामिल करती है। काबीर (1999) के अनुसार सशक्तिकरण को संसाधन, एजेंसी (निर्णय लेने की क्षमता) और उपलब्धियों के माध्यम से समझा जा सकता है। संसाधनों में शिक्षा, आर्थिक साधन, संस्थागत सहायता और सामाजिक नेटवर्क आते हैं। एजेंसी का संबंध निर्णय लेने, अपनी इच्छा व्यक्त करने तथा जीवन के विकल्पों को चुनने की क्षमता से है। उपलब्धियाँ वे सकारात्मक परिणाम हैं जो संसाधनों और एजेंसी के उपयोग से प्राप्त होते हैं। खेलों के संदर्भ में यह ढांचा अत्यंत उपयोगी है। यदि किसी आदिवासी लड़की को खेल प्रशिक्षण, उपकरण, प्रशिक्षक और छात्रावास जैसी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं तो ये उसके लिए संसाधन हैं। खेल में नियमित भागीदारी उसके आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत कर सकती है। प्रतियोगिताओं में उपलब्धियाँ, सामाजिक पहचान और रोजगार के अवसर सशक्तिकरण की उपलब्धियों के रूप में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार खेलों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को एक निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है जिसमें संसाधन, भागीदारी, आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और उपलब्धियाँ एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं।

## महिला सशक्तिकरण में खेलों की भूमिका

खेल महिलाओं के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था के अनुसार खेल लड़कियों को आत्मविश्वास, मानसिक मजबूती और टीम भावना जैसी क्षमताएँ विकसित करने में मदद करते हैं तथा उनके सामाजिक संबंधों और नेतृत्व कौशल को मजबूत कर सकते हैं। खेल महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी का अवसर भी देते हैं। जब महिलाएँ खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेती हैं और उपलब्धियाँ प्राप्त करती हैं, तो उनकी व्यक्तिगत तथा सामाजिक पहचान मजबूत होती है। इससे परिवार और समुदाय में उनके प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन की संभावना भी बढ़ती है।

खेल लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती देने में भी सहायक हैं। लंबे समय से कई समाजों में कुछ शारीरिक और प्रतियोगितात्मक गतिविधियों को पुरुषों से जोड़कर देखा गया है। महिला खिलाड़ियों की सफलता इन धारणाओं को चुनौती देती है। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था ने खेल को लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने वाले महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में रेखांकित किया है। आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में खेलों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि खेल उन्हें स्थानीय समुदाय से बाहर निकलकर जिला, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने का अवसर दे सकते हैं।

## आदिवासी महिलाओं की खेलों में भागीदारी

भारत के कई आदिवासी क्षेत्रों में खेल प्रतिभा की समृद्ध परंपरा दिखाई देती है। विशेष रूप से झारखंड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्रों में हॉकी तथा तीरंदाजी ने स्थानीय प्रतिभाओं को संगठित खेल व्यवस्था से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि प्रतिभा की उपलब्धता और खेल सुविधाओं तक पहुँच अलग-अलग विषय हैं। ग्रामीण तथा दूरस्थ क्षेत्रों में खेल मैदान, प्रशिक्षित प्रशिक्षक, उपकरण, परिवहन, आवासीय सुविधाएँ और प्रतियोगिताओं में भागीदारी के अवसर सीमित हो सकते हैं। इन बाधाओं के कारण प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के खेल करियर में निरंतरता प्रभावित हो सकती है।

खेलो इंडिया के माध्यम से ग्रामीण तथा आदिवासी खेलों को प्रोत्साहित करने और खेल प्रतिभाओं की पहचान करने के प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे कार्यक्रम आदिवासी क्षेत्रों की प्रतिभाओं को औपचारिक खेल व्यवस्था से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। आदिवासी महिला खिलाड़ियों की खेल भागीदारी को केवल पदक या प्रतियोगितात्मक उपलब्धियों के आधार पर नहीं देखना चाहिए। खेल भागीदारी स्वयं आत्मविश्वास, अनुशासन, सामाजिक नेटवर्क और नेतृत्व विकास की प्रक्रिया को मजबूत कर सकती है।

## हॉकी और आदिवासी महिला खिलाड़ी

हॉकी झारखंड और ओडिशा के कई क्षेत्रों में लोकप्रिय खेल है और इन क्षेत्रों से अनेक महिला हॉकी खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर पहुँची हैं। विशेष रूप से झारखंड का सिमडेगा क्षेत्र महिला हॉकी प्रतिभाओं के विकास के लिए जाना जाता है। खेल बुनियादी ढाँचा, प्रशिक्षण और आवासीय सुविधाओं ने ग्रामीण लड़कियों को व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त करने में सहायता दी है। सिमडेगा से संबंधित एक दस्तावेजी अध्ययन में यह बताया गया कि कृत्रिम घास वाला मैदान और छात्रावास जैसी सुविधाओं के विकास ने स्थानीय आदिवासी लड़कियों को हॉकी प्रशिक्षण प्राप्त करने के बेहतर अवसर दिए। इस प्रकार बुनियादी ढाँचे को प्रतिभा विकास और खेल गतिशीलता के महत्वपूर्ण आधार के रूप में देखा जा सकता है। सलिमा टेटे झारखंड की महिला हॉकी की प्रमुख खिलाड़ियों में से एक हैं। हॉकी इंडिया की आधिकारिक प्रोफाइल के अनुसार वह हॉकी झारखंड से संबंधित हैं और उन्होंने टोक्यो ओलंपिक, राष्ट्रमंडल खेल, एशियाई खेल, विश्व कप तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। उन्हें 2024 में अर्जुन पुरस्कार भी मिला।

## सलिमा टेटे की उपलब्धियों का सशक्तिकरण पर प्रभाव:

- परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार
- सिमडेगा क्षेत्र की लड़कियों के लिए हॉकी को व्यवहार्य करियर विकल्प के रूप में स्थापित करना
- सामुदायिक स्तर पर महिला खिलाड़ियों के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन



सलिमा टेटे जैसी खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ आदिवासी क्षेत्रों की युवा लड़कियों के लिए प्रेरणा का कार्य कर सकती हैं। उनकी सफलता यह संदेश देती है कि ग्रामीण और आदिवासी पृष्ठभूमि से आने वाली लड़कियाँ भी उचित प्रशिक्षण और अवसर मिलने पर राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच सकती हैं। हॉकी की टीम आधारित प्रकृति खिलाड़ियों में सहयोग, संचार, सामूहिक निर्णय लेने और नेतृत्व कौशल विकसित करने का अवसर देती है। इसलिए हॉकी आदिवासी महिलाओं के सामाजिक तथा नेतृत्व संबंधी सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है।

**"हॉकी फॉर हर" सामाजिक जिम्मेदारी पहल:** गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (GRSE) की "हॉकी फॉर हर" पहल खूंटी (झारखंड) में आदिवासी किशोरियों को हॉकी प्रशिक्षण, पोषण, चिकित्सा जांच और जीवन-कौशल विकास प्रदान कर रही है। इसे 2026 में सामाजिक जिम्मेदारी पुरस्कार भी मिला है। यह पहल आदिवासी महिला सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण मॉडल प्रस्तुत करती है।

### तीरंदाजी और आदिवासी महिला खिलाड़ी

तीरंदाजी एक ऐसा खेल है जिसमें तकनीकी दक्षता, एकाग्रता, शारीरिक नियंत्रण और मानसिक अनुशासन की विशेष आवश्यकता होती है। झारखंड सहित भारत के कुछ आदिवासी बहुल क्षेत्रों में तीरंदाजी की विशेष पहचान है और यहाँ से अनेक प्रतिभाशाली खिलाड़ी सामने आए हैं। कोमलिका बारी तीरंदाजी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। भारत सरकार के प्रेस सूचना ब्यूरो के अनुसार उन्होंने 2021 युवा विश्व तीरंदाजी प्रतियोगिता में 21 वर्ष से कम आयु वर्ग में स्वर्ण पदक जीता और कैडेट तथा जूनियर दोनों विश्व चैंपियनशिप खिताब जीतने वाली दूसरी भारतीय महिला बनीं।

### खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026 में कोमलिका बारी की उपलब्धियाँ:

- महिला रिकर्व व्यक्तिगत: स्वर्ण पदक
- मिश्रित टीम रिकर्व: स्वर्ण पदक
- महिला टीम रिकर्व: रजत पदक (झारखंड टीम ने नागालैंड से हारकर दूसरा स्थान प्राप्त किया)

कोमलिका बारी की उपलब्धि यह दर्शाती है कि उचित प्रशिक्षण, संस्थागत सहायता और प्रतियोगितात्मक अवसर मिलने पर झारखंड जैसे क्षेत्रों से आने वाली युवा महिला खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त कर सकती हैं। तीरंदाजी में सफलता के लिए खिलाड़ी को अपने लक्ष्य पर लगातार ध्यान केंद्रित करना पड़ता है। इसलिए यह खेल व्यक्तिगत अनुशासन, आत्म-नियंत्रण, लक्ष्य उन्मुखीकरण और मानसिक मजबूती को विकसित करने में योगदान दे सकता है। महिला खिलाड़ियों के लिए यह व्यक्तिगत सशक्तिकरण और आत्मविश्वास के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

## सरकारी योजनाएँ एवं संस्थागत प्रयास

भारत में खेल प्रतिभाओं को विकसित करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ विभिन्न खेल संस्थान कार्य कर रहे हैं। खेलो इंडिया कार्यक्रम खेल संस्कृति के विकास, प्रतिभा पहचान, प्रशिक्षण तथा विभिन्न खेलों के प्रचार-प्रसार पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत महिलाओं के खेल तथा ग्रामीण और आदिवासी खेलों को भी महत्व दिया गया है। महिला खेलों को बढ़ावा देने की आवश्यकता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि खेलों में महिलाओं की भागीदारी केवल खेल उपलब्धि तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह सामाजिक आत्मविश्वास, नेतृत्व और लैंगिक समानता को भी प्रभावित कर सकती है। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था ने खेल संस्थानों में महिलाओं के नेतृत्व प्रतिनिधित्व, समान अवसर, सुरक्षा तथा निवेश को लैंगिक समानता के लिए महत्वपूर्ण माना है।

**झारखंड खेल छात्रवृत्ति योजना:** झारखंड सरकार की इस योजना के तहत अनुसूचित जनजाति की छात्र-खिलाड़ियों को निम्नलिखित लाभ प्रदान किए जाते हैं:

- वार्षिक 2,500 रुपये (मध्य/उच्च विद्यालय) और 3,000 रुपये (महाविद्यालय) की छात्रवृत्ति
- राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धि पर 10,000 रुपये का प्रोत्साहन
- खेल सामग्री (हॉकी स्टिक, धनुष-बाण आदि) की व्यवस्था
- 200 रुपये दैनिक भत्ता और रेल किराया

**मध्य प्रदेश: पहली आदिवासी महिला खेल अकादमी:** मध्य प्रदेश सरकार ने 2026 में पहली आदिवासी महिला खेल अकादमी की स्थापना की योजना घोषित की है, जो फुटबॉल, तीरंदाजी, एथलेटिक्स, जिम्नास्टिक्स और महिला क्रिकेट पर केंद्रित होगी। आदिवासी महिला खिलाड़ियों के लिए सरकारी योजनाओं का वास्तविक महत्व तभी दिखाई देता है जब इनका लाभ दूरस्थ क्षेत्रों तक प्रभावी रूप से पहुँचे। इसलिए बुनियादी ढाँचे के साथ-साथ प्रशिक्षण, उपकरण, छात्रावास, परिवहन, पोषण और शिक्षा सहायता को भी योजनाओं का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना आवश्यक है।

## खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026

खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026 भारत में आदिवासी खेल प्रतिभाओं के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। प्रथम खेलो इंडिया जनजातीय खेलों का आयोजन 25 मार्च से 3 अप्रैल 2026 तक छत्तीसगढ़ के रायपुर, जगदलपुर और सरगुजा में किया गया। प्रेस सूचना ब्यूरो के अनुसार यह खेलो इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत आदिवासी खिलाड़ियों के लिए समर्पित पहला राष्ट्रीय बहु-खेल आयोजन था और इसमें 30 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशों से प्रतिभागियों ने भाग लिया।

## मुख्य आँकड़े:



- कुल प्रतिभागी: लगभग 3,800 (खिलाड़ी, प्रशिक्षक, अधिकारी)
- कुल पदक खेल: 7 (एथलेटिक्स, फुटबॉल, हॉकी, भारोत्तोलन, तीरंदाजी, तैराकी, कुश्ती)
- प्रदर्शन खेल: 2 (मल्लखंब, कबड्डी)
- कुल स्वर्ण पदक: 106

#### पदक तालिका (शीर्ष 3 राज्य):

| रैंक | राज्य   | स्वर्ण | रजत | कांस्य | कुल |
|------|---------|--------|-----|--------|-----|
| 1    | कर्नाटक | 23     | 8   | 7      | 38  |
| 2    | ओडिशा   | 21     | 15  | 21     | 57  |
| 3    | झारखंड  | 16     | 8   | 11     | 35  |

#### तीरंदाजी में महिलाओं के परिणाम:

- महिला रिकर्व व्यक्तिगत: कोमलिका बारी (झारखंड) - स्वर्ण
- महिला रिकर्व टीम: नागालैंड - स्वर्ण, झारखंड - रजत, मध्य प्रदेश - कांस्य

#### हॉकी में महिलाओं के परिणाम:

- महिला हॉकी फाइनल: ओडिशा ने मिज़ोरम को 1-0 से हराकर स्वर्ण पदक जीता
- तीसरा स्थान: झारखंड ने मध्य प्रदेश को 4-0 से हराकर कांस्य पदक जीता

खेलो इंडिया जनजातीय खेलों का महत्व केवल एक प्रतियोगिता के आयोजन में नहीं है। यह आदिवासी प्रतिभाओं को राष्ट्रीय दृश्यता, प्रतियोगितात्मक अवसर और प्रतिभा पहचान का मंच प्रदान करता है। हॉकी और तीरंदाजी को इसमें शामिल किया जाना इस अध्ययन के लिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि दोनों खेलों में आदिवासी क्षेत्रों से आने वाली महिला प्रतिभाओं के उदाहरण उपलब्ध हैं।

#### हॉकी एवं तीरंदाजी द्वारा आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण

हॉकी और तीरंदाजी आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के अलग-अलग लेकिन परस्पर पूरक माध्यम प्रस्तुत करते हैं। हॉकी टीम आधारित खेल होने के कारण टीम भावना, संचार, सहयोग और नेतृत्व को विकसित करता है। इसके

विपरीत तीरंदाजी व्यक्तिगत प्रदर्शन पर आधारित होने के कारण एकाग्रता, अनुशासन, लक्ष्य उन्मुखीकरण और आत्म-प्रबंधन को अधिक महत्व देती है।

खेलों में सफलता महिला खिलाड़ियों को सामाजिक पहचान और सम्मान प्रदान कर सकती है। जब किसी खिलाड़ी की उपलब्धियों को परिवार, समुदाय और व्यापक समाज में पहचान मिलती है, तो इससे अन्य लड़कियों के लिए भी खेलों में भागीदारी की प्रेरणा उत्पन्न हो सकती है। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था खेल को महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण तथा लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने वाले माध्यम के रूप में देखती है।

खेल आर्थिक सशक्तिकरण के अवसर भी उत्पन्न कर सकते हैं। उच्च स्तर की उपलब्धियों से पुरस्कार, छात्रवृत्तियाँ, संस्थागत रोजगार तथा अन्य करियर अवसरों की संभावना बन सकती है। हालांकि प्रत्येक खिलाड़ी को ये अवसर समान रूप से प्राप्त हों, यह आवश्यक नहीं है। इसलिए खेल नीति को पदक उपलब्धि के साथ दीर्घकालिक करियर सहायता पर भी ध्यान देना चाहिए। शिक्षा और खेल को साथ लेकर चलने की व्यवस्था भी आदिवासी महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण है। आवासीय अकादमी, खेल छात्रावास और शैक्षिक सहायता ग्रामीण तथा दूरस्थ क्षेत्रों की लड़कियों को घर से बाहर संरचित शिक्षा और खेल प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर दे सकते हैं।

### हॉकी एवं तीरंदाजी का तुलनात्मक अध्ययन

हॉकी और तीरंदाजी दोनों आदिवासी महिला खिलाड़ियों के सशक्तिकरण में योगदान कर सकते हैं, लेकिन दोनों खेलों की प्रकृति अलग है। हॉकी मुख्यतः टीम खेल है, जिसमें खिलाड़ियों को सामूहिक रणनीति, संचार, सहयोग और सामूहिक निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। इसलिए हॉकी सामाजिक नेटवर्क और नेतृत्व विकास के लिए विशेष अवसर प्रदान करती है।

इसके विपरीत तीरंदाजी मुख्यतः व्यक्तिगत प्रदर्शन आधारित खेल है। खिलाड़ी को अपने प्रदर्शन, एकाग्रता, तकनीक और मानसिक नियंत्रण पर स्वयं निर्भर रहना पड़ता है। इसलिए तीरंदाजी व्यक्तिगत अनुशासन, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता के विकास में विशेष योगदान दे सकती है।

### तुलनात्मक विश्लेषण:

| आयाम        | हॉकी                    | तीरंदाजी                         |
|-------------|-------------------------|----------------------------------|
| प्रकृति     | टीम खेल                 | व्यक्तिगत खेल                    |
| प्रमुख कौशल | टीम भावना, संचार, सहयोग | एकाग्रता, अनुशासन, आत्म-नियंत्रण |

| सशक्तिकरण का प्रकार | सामूहिक सशक्तिकरण                       | व्यक्तिगत सशक्तिकरण             |
|---------------------|-----------------------------------------|---------------------------------|
| बुनियादी ढाँचा      | कृत्रिम घास मैदान, टीम उपकरण, छात्रावास | तीरंदाजी रेंज, धनुष, बाण        |
| प्रेरणा स्रोत       | सलिमा टेटे, रानी रामपाल                 | कोमलिका बारी, दीपिका कुमारी     |
| सामाजिक प्रभाव      | सामूहिक पहचान, टीम भावना                | व्यक्तिगत उपलब्धि, आत्म-अनुशासन |

दोनों खेलों में बुनियादी ढाँचा और प्रशिक्षण महत्वपूर्ण हैं। हॉकी के लिए उच्च गुणवत्ता वाला मैदान, उपकरण, टीम प्रशिक्षण और नियमित प्रतियोगिता आवश्यक हैं, जबकि तीरंदाजी में उपयुक्त धनुष, बाण, रेंज और विशेषज्ञ प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस कारण दोनों खेलों के लिए नीतिगत हस्तक्षेप की प्रकृति कुछ अलग हो सकती है। इस प्रकार हॉकी को सामूहिक सशक्तिकरण और तीरंदाजी को व्यक्तिगत सशक्तिकरण के संदर्भ में देखा जा सकता है। हालांकि दोनों खेलों का अंतिम उद्देश्य महिला खिलाड़ियों की क्षमता, आत्मविश्वास और अवसरों को बढ़ाना होना चाहिए।

### आदिवासी महिला खिलाड़ियों की प्रमुख चुनौतियाँ

आदिवासी महिला खिलाड़ियों के सशक्तिकरण के मार्ग में अनेक संरचनात्मक चुनौतियाँ मौजूद हो सकती हैं। दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त खेल बुनियादी ढाँचे की कमी प्रतिभाओं के नियमित प्रशिक्षण को प्रभावित कर सकती है। कई खिलाड़ियों के लिए प्रशिक्षण केंद्र तक पहुँचने के लिए परिवहन भी समस्या बन सकती है।

आर्थिक सीमाएँ भी महत्वपूर्ण चुनौती हैं। खेल उपकरण, यात्रा, प्रशिक्षण, प्रतियोगिता शुल्क और पोषण से जुड़े खर्च आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए कठिन हो सकते हैं। तीरंदाजी जैसे खेलों में गुणवत्तापूर्ण उपकरण की आवश्यकता होने के कारण यह चुनौती और महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षा और खेल के बीच संतुलन भी एक प्रमुख विषय है। यदि खिलाड़ी को पर्याप्त शैक्षिक सहायता न मिले तो खेल करियर समाप्त होने के बाद उसके लिए रोजगार और आजीविका के अवसर सीमित हो सकते हैं। इसलिए खेल प्रशिक्षण को शिक्षा और करियर मार्गदर्शन के साथ जोड़ना आवश्यक है।

महिला खिलाड़ियों के लिए सुरक्षित आवास, परिवहन और सुरक्षा तंत्र भी महत्वपूर्ण हैं। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था ने खेल व्यवस्था में लैंगिक हिंसा, असमान निवेश, नकारात्मक रुढ़ियों तथा महिलाओं के लिए असमान अवसर जैसी चुनौतियों को रेखांकित किया है। इसके अतिरिक्त खेलों में पर्याप्त महिला प्रशिक्षक और मार्गदर्शकों की उपलब्धता भी बढ़ाई जानी चाहिए। महिला खिलाड़ियों को सुरक्षित, सम्मानजनक और लैंगिक-संवेदनशील वातावरण मिलने पर उनकी भागीदारी और निरंतरता बेहतर हो सकती है।

## साहित्य समीक्षा

काबीर (1999) का सशक्तिकरण ढाँचा महिला सशक्तिकरण के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। उनके अनुसार सशक्तिकरण को संसाधन, एजेंसी (निर्णय लेने की क्षमता) और उपलब्धियों के माध्यम से समझा जा सकता है। यह ढाँचा खेलों में महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन करने के लिए उपयोगी है क्योंकि खेल सुविधाएँ संसाधन उपलब्ध कराती हैं, खेल भागीदारी निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास को मजबूत कर सकती है तथा खेल उपलब्धियाँ सशक्तिकरण परिणामों में परिवर्तित हो सकती हैं।

मित्रा (2008) ने भारत में अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करते हुए आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति में विविधता पर ध्यान आकर्षित किया। यह दृष्टिकोण वर्तमान अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आदिवासी महिलाओं को एक समान सामाजिक समूह मानकर उनकी समस्याओं का विश्लेषण करना पर्याप्त नहीं होगा।

महिला और खेलों से संबंधित संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था के साहित्य में खेलों को लैंगिक समानता तथा सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में देखा गया है। खेल महिलाओं में आत्मसम्मान, टीम भावना, मानसिक मजबूती और नेतृत्व जैसी क्षमताओं को विकसित कर सकते हैं तथा हानिकारक लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती दे सकते हैं।

जेनोडो (2026): *"सरकारी खेल और शारीरिक शिक्षा योजनाओं की आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण में भूमिका"* - इस अध्ययन के अनुसार सरकारी खेल योजनाओं में भागीदारी से आदिवासी महिलाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण, स्वास्थ्य जागरूकता, सामाजिक मान्यता और शैक्षिक निरंतरता में सुधार देखा गया। हालाँकि, योजनाओं की सीमित जागरूकता, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, सांस्कृतिक प्रतिबंध और प्रशिक्षित कर्मियों की कमी जैसी चुनौतियाँ भी सामने आईं।

स्काइरेक (कोई वर्ष नहीं): *"ग्रामीण भारत में खेलों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण"* - इस अध्ययन में झारखंड की आदिवासी महिला तीरंदाजों के विकास को पारंपरिक कौशल और आधुनिक प्रशिक्षण के सफल संयोजन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आर्थिक लाभ और सामाजिक मान्यता से पारिवारिक स्थितियाँ सुधरी हैं और लैंगिक मानदंडों में बदलाव आया है।

भारतीय संदर्भ में खेलों इंडिया तथा अन्य सरकारी प्रयासों का उद्देश्य खेल प्रतिभाओं को पहचानना और उन्हें प्रशिक्षण तथा प्रतियोगितात्मक अवसर उपलब्ध कराना है। विशेष रूप से ग्रामीण, आदिवासी और जनजातीय खेलों को बढ़ावा देने की दिशा में संस्थागत प्रयास आदिवासी क्षेत्रों की प्रतिभाओं के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

हॉकी के संदर्भ में सलिमा टेटे जैसी खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ और तीरंदाजी में कोमलिका बारी की अंतरराष्ट्रीय सफलता यह दर्शाती है कि आदिवासी क्षेत्रों से आने वाली महिला प्रतिभाएँ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं। सलिमा टेटे की अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों की पुष्टि हॉकी इंडिया की आधिकारिक प्रोफाइल से होती है, जबकि कोमलिका बारी की युवा विश्व तीरंदाजी चैंपियनशिप उपलब्धि भारत सरकार के प्रेस सूचना ब्यूरो स्रोत में दर्ज है।

### अनुसंधान अंतराल

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत में आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, महिला सशक्तिकरण तथा महिलाओं की खेल भागीदारी पर अलग-अलग अध्ययन उपलब्ध हैं। इसी प्रकार हॉकी और तीरंदाजी के संबंध में खिलाड़ियों की उपलब्धियों और खेल विकास पर भी पर्याप्त सामग्री मिलती है। फिर भी आदिवासी महिलाओं, खेल भागीदारी और सशक्तिकरण को एक संयुक्त विश्लेषणात्मक ढाँचे में रखकर हॉकी और तीरंदाजी का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देता है। विशेष रूप से खेल भागीदारी के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और नेतृत्व परिणामों को एक साथ देखने की आवश्यकता है। 2026 में खेलो इंडिया जनजातीय खेलों के आयोजन ने इस विषय को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। चूँकि यह आदिवासी खिलाड़ियों के लिए एक नया राष्ट्रीय खेल मंच है, इसलिए इसके लैंगिक और सशक्तिकरण प्रभावों पर भविष्य में अधिक अनुभवजन्य शोध की आवश्यकता होगी। इसी शोध अंतराल को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन हॉकी और तीरंदाजी को आदिवासी महिला सशक्तिकरण के दो अलग-अलग लेकिन परस्पर पूरक मार्गों के रूप में विश्लेषित करता है।

### अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है और मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन में भारत की जनगणना, जनजातीय कार्य मंत्रालय, युवा कार्य और खेल मंत्रालय, खेलो इंडिया, प्रेस सूचना ब्यूरो, हॉकी इंडिया, संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था तथा उपलब्ध अकादमिक साहित्य और दस्तावेजी अध्ययनों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन में किसी प्रकार का प्राथमिक सर्वेक्षण, साक्षात्कार या प्रश्नावली नहीं किया गया है। उपलब्ध द्वितीयक जानकारी को विषयवस्तु और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से व्यवस्थित किया गया है। विश्लेषण में सामाजिक सशक्तिकरण, आर्थिक अवसर, शिक्षा, आत्मविश्वास, नेतृत्व, खेल बुनियादी ढाँचा, संस्थागत सहायता तथा चुनौतियों को प्रमुख विश्लेषणात्मक आयामों के रूप में लिया गया है। काबीर के संसाधन-एजेंसी-उपलब्धि ढाँचे को अध्ययन के अवधारणात्मक आधार के रूप में उपयोग किया गया है। इस ढाँचे के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है

कि खेल संसाधन किस प्रकार भागीदारी और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं तथा खेल उपलब्धियाँ किस प्रकार व्यापक सशक्तिकरण में योगदान दे सकती हैं।

### प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि खेल आदिवासी महिलाओं के लिए सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकते हैं। खेल भागीदारी से आत्मविश्वास, अनुशासन, सामाजिक अंतःक्रिया और नेतृत्व जैसी क्षमताओं के विकास की संभावना बढ़ती है। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था भी महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण तथा लैंगिक समानता के लिए खेल की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करती है। हॉकी की टीम आधारित प्रकृति आदिवासी महिला खिलाड़ियों में टीम भावना, संचार और सामूहिक नेतृत्व के विकास के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। सलिमा टेटे जैसी खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ इस बात का दस्तावेजी उदाहरण हैं कि झारखंड से आने वाली महिला खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं।

तीरंदाजी व्यक्तिगत अनुशासन और एकाग्रता पर आधारित होने के कारण व्यक्तिगत निर्णय लेने की क्षमता तथा मानसिक मजबूती के विकास का अवसर प्रदान करती है। कोमलिका बारी की युवा विश्व तीरंदाजी चैंपियनशिप और खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026 में सफलता भारतीय तीरंदाजी में युवा महिला प्रतिभा की क्षमता का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026 ने आदिवासी खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर एक समर्पित प्रतियोगितात्मक मंच उपलब्ध कराया। आयोजन में हॉकी और तीरंदाजी दोनों को पदक खेलों में शामिल किया गया, जिससे इन खेलों की संस्थागत दृश्यता और अधिक बढ़ी। अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि खेल उपलब्धियाँ अपने आप स्थायी सशक्तिकरण सुनिश्चित नहीं करतीं। यदि खिलाड़ियों को शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षित आवास, आर्थिक सहायता, करियर योजना और रोजगार अवसर उपलब्ध न हों तो खेल से प्राप्त सशक्तिकरण सीमित रह सकता है।

### सुझाव एवं नीतिगत अनुशंसाएँ

आदिवासी महिला खिलाड़ियों के सशक्तिकरण के लिए सबसे पहले आदिवासी बहुल क्षेत्रों में खेल बुनियादी ढाँचे का विस्तार किया जाना चाहिए। हॉकी के लिए आधुनिक खेल सतहें और प्रशिक्षण सुविधाएँ तथा तीरंदाजी के लिए सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण तीरंदाजी रेंज स्थापित किए जाने चाहिए। ग्रामीण स्तर पर प्रतिभा पहचान को मजबूत करना भी आवश्यक है ताकि प्रतिभाशाली लड़कियाँ प्रारंभिक अवस्था में ही खेल व्यवस्था से जुड़ सकें।

महिला खिलाड़ियों के लिए सुरक्षित आवासीय छात्रावास, परिवहन और प्रशिक्षित महिला प्रशिक्षकों की व्यवस्था को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। खेल प्रशिक्षण के साथ औपचारिक शिक्षा को जोड़ा जाना चाहिए ताकि खिलाड़ी खेल

करियर के साथ अपनी शैक्षिक प्रगति भी जारी रख सकें। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आने वाली खिलाड़ियों के लिए उपकरण, पोषण, यात्रा और प्रशिक्षण सहायता की निरंतर व्यवस्था आवश्यक है। विशेष रूप से तीरंदाजी में उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण की लागत को ध्यान में रखते हुए लक्षित उपकरण सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

**झारखंड खेल छात्रवृत्ति योजना का विस्तार:** इस योजना के तहत अनुसूचित जनजाति छात्र-खिलाड़ियों को वार्षिक 2,500-3,000 रुपये की छात्रवृत्ति, राष्ट्रीय उपलब्धि पर 10,000 रुपये का प्रोत्साहन, और खेल सामग्री की व्यवस्था प्रदान की जाती है। इस योजना का विस्तार अन्य आदिवासी बहुल राज्यों में भी किया जाना चाहिए।

खेल संस्थानों में लैंगिक-संवेदनशील सुरक्षा तंत्र को मजबूत किया जाना चाहिए। महिलाओं और लड़कियों के लिए सुरक्षित तथा समावेशी खेल वातावरण बनाना आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था के अनुसार खेल संगठनों को महिलाओं के नेतृत्व अवसरों, समान आर्थिक अवसरों, सुरक्षा और भागीदारी को बढ़ावा देने की दिशा में संस्थागत सुधार करने चाहिए। अंततः खिलाड़ियों के लिए खेल-पश्चात करियर योजना आवश्यक है। खेल के बाद रोजगार, प्रशिक्षण, शारीरिक शिक्षा, खेल प्रशासन और अन्य करियर मार्ग उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि खेल उपलब्धि दीर्घकालीन सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में परिवर्तित हो सके।

**"हॉकी फॉर हर" जैसे सामाजिक जिम्मेदारी मॉडल का विस्तार:** GRSE की इस पहल ने खूंटी (झारखंड) में आदिवासी किशोरियों को हॉकी प्रशिक्षण, पोषण, चिकित्सा जांच और जीवन-कौशल विकास प्रदान कर सफलता प्राप्त की है। ऐसे मॉडल को अन्य आदिवासी क्षेत्रों में भी लागू किया जाना चाहिए।

## निष्कर्ष

आदिवासी महिला खिलाड़ियों का सशक्तिकरण भारत में महिला सशक्तिकरण, सामाजिक समावेशन और खेल विकास के बीच महत्वपूर्ण संबंध को प्रदर्शित करता है। हॉकी और तीरंदाजी केवल प्रतियोगितात्मक खेल नहीं हैं, बल्कि वे आदिवासी महिलाओं के लिए आत्मविश्वास, पहचान, नेतृत्व, अनुशासन और सामाजिक भागीदारी के अवसर भी उत्पन्न कर सकते हैं। हॉकी की सामूहिक प्रकृति टीम भावना, संचार और नेतृत्व को बढ़ावा देती है, जबकि तीरंदाजी व्यक्तिगत एकाग्रता, अनुशासन और आत्म-प्रबंधन को मजबूत करती है। इस दृष्टि से दोनों खेल आदिवासी महिला सशक्तिकरण के अलग-अलग लेकिन परस्पर पूरक मार्ग प्रस्तुत करते हैं। सलिमा टेटे और कोमलिका बारी जैसी खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ यह प्रमाणित करती हैं कि आदिवासी क्षेत्रों से आने वाली महिला प्रतिभाओं में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की क्षमता है। खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026 ने आदिवासी खिलाड़ियों के लिए एक नया राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराया है। हॉकी और तीरंदाजी को इसमें शामिल किए जाने से इन खेलों के माध्यम से आदिवासी प्रतिभाओं की पहचान और विकास के लिए नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। इसलिए आदिवासी महिला खिलाड़ियों के वास्तविक और स्थायी सशक्तिकरण के लिए केवल खेल प्रतियोगिताओं और पदकों पर ध्यान अनामिका हेम्ब्रोम, डॉ. संजीव कुमार सिन्हा



देना पर्याप्त नहीं है। खेल बुनियादी ढाँचा, शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य देखभाल, सुरक्षित आवास, प्रशिक्षण, आर्थिक सहायता, सुरक्षा और खेल-पश्चात रोजगार को एक एकीकृत नीति ढाँचे में शामिल करना आवश्यक है। तभी हॉकी और तीरंदाजी आदिवासी महिलाओं के लिए दीर्घकालीन सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत सशक्तिकरण के प्रभावी साधन बन सकेंगे।

### संदर्भ सूची

1. काबीर, एन. (1999). संसाधन, एजेंसी, उपलब्धियाँ: महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार। *डेवलपमेंट एंड चेंज*, 30(3), 435-464। <https://doi.org/10.1111/1467-7660.00125>
2. मित्रा, ए. (2008). भारत में अनुसूचित जनजातियों में महिलाओं की स्थिति। *जर्नल ऑफ सोशियो-इकोनॉमिक्स*, 37(3), 1202-1217। <https://doi.org/10.1016/j.socec.2006.12.077>
3. संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था। (2007). *महिलाएँ, लैंगिक समानता और खेल*। <https://www.unwomen.org/en/digital-library/publications/2007/12/women2000-and-beyond-women-gender-equality-and-sport>
4. संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था। (2020). *पीढ़ी समानता के लिए खेल: खेल के माध्यम से लैंगिक समानता को आगे बढ़ाना*। <https://www.unwomen.org/en/news/stories/2020/3/news-sport-for-generation-equality>
5. संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था। (2024). *तथ्य और आँकड़े: खेल में महिलाएँ*। <https://www.unwomen.org/en/articles/facts-and-figures/facts-and-figures-women-in-sport>
6. संयुक्त राष्ट्र महिला संस्था और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति। (2025). *लैंगिक दृष्टिकोण के साथ खेल पारिस्थितिकी तंत्र के लिए उपकरण किट*। <https://www.unwomen.org/en/digital-library/publications/2025/12/toolkit-for-a-sports-ecosystem-with-a-gender-perspective>
7. जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार। (कोई वर्ष नहीं)। *जनजातीय आँकड़े और जनसांख्यिकीय जानकारी*। <https://tribal.nic.in>
8. युवा कार्य और खेल मंत्रालय, भारत सरकार। (कोई वर्ष नहीं)। *खेलो इंडिया*। <https://kheloindia.gov.in>
9. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार। (2026). खेलो इंडिया जनजातीय खेल: जनजातीय खेलों में नया अध्याय (PRID 2245880)। <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2245880>
10. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार। (2026, 31 मार्च)। विरासत से उच्च प्रदर्शन तक: खेलो इंडिया जनजातीय खेल भारत के जनजातीय हृदयस्थल से चैंपियन बना रहा है (PRID 2247398)। <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2247398>
11. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार। (2021, 17 अगस्त)। जूनियर और कैंडेट टीमों ने युवा विश्व तीरंदाजी चैंपियनशिप में भारत के अब तक के सर्वोच्च 15 पदक जीते (PRID 1746743)। <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1746743>

12. हॉकी इंडिया। (n.d)। *सलिमा टेटे – खिलाड़ी प्रोफाइल* <https://hockeyindia.org/players/salima-tete-profile-2131>
13. द इंडियन एक्सप्रेस। (2024, जनवरी 28)। बुनियादी ढाँचे तक पहुँच गेम-चेंजर साबित हुई: सिमडेगा में आदिवासी लड़कियों के जीवन को कैसे बदला एक कृत्रिम घास मैदान और छात्रावास ने। <https://indianexpress.com/article/sports/hockey/how-astroturf-hostel-changed-lives-of-tribal-girls-in-simdega-9089887>
14. शिंदे, ए. आर. (2026)। भारत में आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण में सरकारी खेल एवं शारीरिक शिक्षा योजनाओं की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एंड एप्लाइड रिसर्च, 7(6), 294–298। <https://doi.org/10.5281/zenodo.18887559>
15. त्रिपाठी, एम. (2017)। ग्रामीण भारत में खेलों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: चुनौतियाँ और सफलता की कहानियाँ। इकोनोमीक: ए जर्नल ऑफ एडवांसेज इन मैनेजमेंट, आईटी एंड सोशल साइंसेज, 7(8), 208–217.
16. कल्याण विभाग, झारखंड सरकार। (कोई वर्ष नहीं)। *झारखंड खेल छात्रवृत्ति* <https://www.myscheme.gov.in/schemes/ssj>
17. गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स। (2026, 28 अगस्त)। *हॉकी फॉर हर सामाजिक जिम्मेदारी पहल* <https://www.psuconnect.in/award/grse-hockey-for-her-csr-initiative-scores-a-winning-goal>
18. न्यूज़ ऑन एयर। (2026, 3 अप्रैल)। खेलो इंडिया जनजातीय खेल समाप्त; कर्नाटक बना समग्र विजेता। <https://www.newsonair.gov.in/khelo-india-tribal-games-hockey-football-matches-continue-on-day-eight>
19. द न्यूज़ मिल। (2026, 3 अप्रैल)। कर्नाटक जीतता है खेलो इंडिया जनजातीय खेल; छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने पदक विजेताओं के लिए नकद पुरस्कार की घोषणा की। <https://thenewsmill.com/2026/04/karnataka-wins-khelo-india-tribal-games-chhattisgarh-cm-announces-rewards-for-medalists>
20. द न्यूज़ मिल। (2026, 7 अप्रैल)। खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026: उभरती आदिवासी खेल प्रतिभा को उजागर करता है। <https://thenewsmill.com/2026/04/khelo-india-tribal-games-2026-highlights-emerging-tribal-sport-talent>
21. द इंडियन आवाज़। (2026, 3 अप्रैल)। खेलो इंडिया जनजातीय खेल: हॉकी और फुटबॉल मैच आठवें दिन भी जारी रहे। <https://theindianawaaz.com/khelo-india-tribal-games-hockey-football-matches-continue-on-day-eight>
22. माय खेल। (2026, 3 अप्रैल)। खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026: कर्नाटक ने 23 स्वर्ण पदक के साथ inaugural KITG पर वर्चस्व स्थापित किया। <https://www.mykhel.com/more-sports/khelo-india-tribal-games-2026-karnataka-dominates-inaugural-kitg-with-23-gold-medals-423233.html>
23. आईएसजी। (2026, 4 अप्रैल)। खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026: कर्नाटक समग्र चैंपियन, मेज़बान छत्तीसगढ़ नौवें स्थान पर। <https://www.isg.net.in/post/khelo-india-tribal-games-2026-karnataka-overall-champions-hosts-chhattisgarh-finish-ninth>



24. उत्कर्ष। (2026, 22 अगस्त)। खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026: कर्नाटक ने सबसे अधिक पदक जीते। <https://utkarsh.com/current-affairs/national/sport-update/khelo-india-tribal-games-2026-karnataka-wins-the-most-medals>
25. खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026। (कोई वर्ष नहीं)। पदक तालिका। <https://tribal.kheloindia.gov.in/medal-tally>
26. खेलो इंडिया जनजातीय खेल 2026। (कोई वर्ष नहीं)। कार्यक्रम और परिणाम। <https://tribal.kheloindia.gov.in/schedule-and-results>
27. स्पोर्ट सपोर्ट। (2026, 4 सितंबर)। भारत में सरकारी खेल योजनाएँ। <https://sportsupport.in/schemes>
28. फर्ग्यूसन, एल., एप, जी. बी., वुटुन्नी, के., डन, एम., मैकह्यू, टी.-एल., एवं हम्बर्ट, एम. एल. (2019)। “यह केवल खेल में अच्छा प्रदर्शन करने के बारे में नहीं है; यह शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ रहने के बारे में भी है”: खेल में आदिवासी महिला खिलाड़ियों के उत्कर्ष के अर्थ और अनुभव। क्वालिटेटिव रिसर्च इन स्पोर्ट, एक्सरसाइज एंड हेल्थ, 11(1), 1–19। <https://doi.org/10.1080/2159676X.2018.1458332>
29. वर्टिस्की, पी., एवं कैप्टन, जी. (1998)। इतिहास से अधिक मिथक: अमेरिकी संस्कृति और अश्वेत महिलाओं की एथलेटिक क्षमता के प्रतिनिधित्व। जर्नल ऑफ स्पोर्ट हिस्ट्री, 25(3), 532–561।